पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

बी.एड. द्वितीय वर्ष

Bachelor of Education

(Second Year)

पाठ्यक्रम

शिक्षा विभाग

पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर
(छ.ग. शासन के अधिनियम क्रमांक 26 सन् 2004 द्वारा स्थापित)
कोनी–बिरकोना मार्ग ,बिलासपुर (छ.ग.) 495009
दूरभाष क्रमांक : (07752) 210312 फैक्स (07752) 213073
wwwpssou.ac.in Email-registrar@pssou.ac.in

पाठ्यक्रम विवरण
बी.एड. (द्वितीय वर्ष)

विषय – शीर्षक	प्रश्न–पत्र
शिक्षण और अधिगम	प्रथम
जेंडर, विद्यालय एवं समाज	द्वितीय
ज्ञान तथा पाठ्यचर्या	तृतीय
अधिगम के लिए आकलन	चतुर्थ
निर्देशन एवं परामर्श	पंचम्

16.12.22

16/12/22

16/12/22

बी.एड. द्वितीय वर्ष

बी.एड. द्वितीय वर्ष

प्रश्न पत्र – प्रथम

शिक्षण और अधिगम

इकाई 1 – अधिगम अवबोध

अधिगम की अवधारणा, अधिगम का अर्थ एवं परिभाएं, अधिगम की प्रकृति एवं विशेषताएं, अधिगम की प्रक्रिया, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक, प्रभावकारी अधिगम की अवधारणा, प्रभावशाली अधिगम के आयाम, प्रभावशाली अधिगम के घटक, प्रभावशाली अधिगम की विधियां, प्रभावशाली अधिगम के बाधक तत्व, प्रभावशाली अधिगम के उपाय, अधिगम स्थानांतरण, परिभाषाएं, स्थानांतरण के प्रकार, अधिगम के स्थानांतरण सिद्धांत, अधिगम स्थानांतरण की परिस्थिति, अधिगम स्थानांतरण को प्रभावित करने वाले करक, अधिगम के नियम, अधिगम वक्र, अधिगम के वक्र, अधिगम के वक्र की विशेषताएं, अधिगम का पठार, परिभाषा, पठारों के कारण, पठार का निराकरण के उपाय।

इकाई 2 – अधिगम के उपागम

सीखने के सिद्धांतों का वर्गीकरण, सीखने के सिद्धांतों के विभिन्न प्राकर थॉर्नडाइक का उद्दीपक अनुक्रिया सिद्धांत, थॉर्नडाइक का मूल आधार, थॉर्नडाइक का प्रयोग, थॉर्नडाइक के सिद्धांत में अधिगम के तत्व, उद्दीपन अनुक्रिया सिद्धांत की विशेषताएं, उद्दीपन अनुक्रिया सिद्धांत की कमियां/दोष, स्किनर का सक्रिय अनुबंध सिद्धांत, सक्रिय अनुबंध, स्किनर का प्रयोग, सक्रिय अनुबंध एवं शिक्षा, स्किनर के विचारों की आलोचना, पॉवलाव का अनुकूलित अनुक्रिया का सिद्धांत, अनुकूलित अनुक्रिया, पॉवलाव का प्रयोग, अनुकूलित अनुक्रिया को नियंत्रित करने वाले कारक, अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत का शैक्षिक महत्व, कोहलर का अंतदृष्टि या सुझ का सिद्धांत, क्षेत्र सिद्धांत– अंर्तदर्शन द्वारा अधिगम, कोहलर के प्रयोग, अंतदृष्टि को प्रभावित करने वाले कारक, अंतदृष्टि के सिद्धात का शैक्षिक महत्व, अंतदृष्टि सिद्धांत की आलोचना, ब्रुनर का सामाजिक संरचनावाद का सिद्धांत, ज्ञान की संरचना, ब्रुनर के संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएँ, ब्रुनर के सिद्धांत की चार मुख्य विशेषताएँ, ब्रुनर के सिद्धांत का शैक्षिक निहितार्थ, अधिगम का स्थानांतरण, अधिगम स्थानांतरण एवं अधिगम अंतरण के तत्व, अंतरण के प्रकार, अधिगम अंतरण में शिक्षक का महत्व/भूमिका।

इकाई 3 – बुद्धि

बुद्धि का स्वरूप, परिभाषा, बुद्धि की विशेषताएं, बुद्धि का विकास, बुद्धि के विकास को प्रभावित करने वाले करक, बुद्धि के प्रकार, बुद्धि के सिद्धांत, कारकीय सिद्धांत, बिने का एक कारक सिद्धांत, स्पीयरमैन का द्विकारक सिद्धांत, थॉर्नडाइक का बहुकारक सिद्धांत, थॉमसन का प्रतिदर्श सिद्धांत, थस्टर्न का समूह कारक सिद्धांत, बर्नर एवं बर्ड का पदानुक्रम सिद्धांत, गिलफॉर्ड का त्रि–आयामी सिद्धांत, कैटल का सिद्धांत, गार्डनर का बहु–बुद्धि का सिद्धांत, प्रक्रिया उन्मुखी सिद्धांत, जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत, स्टर्नबर्ग का त्रि–तंत्र सिद्धांत, बुद्धि का मापन एवं परीक्षण।

इकाई 4 – स्मृति

स्मृति का अर्थ एवं परिभाषा, अच्छी स्मृति के लक्षण, अच्छी स्मृति के मूल तत्व, स्मृति के सोपान, स्मृति के प्रकार, संवेदी स्मृति, अल्पकालीन स्मृति/लघुकालीन स्मृति, दीर्घकालीन स्मृति, स्मृति की प्रक्रिया, स्मृति को प्रभावित करने वाले कारक, स्मृति की विधियां, स्मृति की विधियां, स्मृति परीक्षण, विस्मृति का अर्थ एवं परिभाषा, विस्मृति के कारण, विस्मृति के प्रकार, विस्मृति के सिद्धांत, अधिगम के विस्मृति कम करने के उपाय, शिक्षा में विस्मृति का महत्व।

बी.एड द्वितीय वर्ष

द्वितीय प्रश्न पत्र

जेंडर, विद्यालय एवं समाज

इकाई 1:– जेंडर

जेंडर का सर्वप्रथम प्रयोग, जेंडर क्या है?, जेंडर अवधारणा एवं अर्थ, लिंग की परिभाषा, जेंडर से संबंधित महत्त्वपूर्ण तथ्य, विकास के प्रमुख सिद्धांत, जेंडर अभिव्यक्ति, जेंडर, जेंडर और लिंग, जेंडर और लिंग में अंतर, सेक्स और जेंडर विशेषताओं के उदाहरण, लिंग जेंडर और लैंगिकता का अर्थ, जेंडर पहचान, जेंडर पहचान क्या है, जेंडर पहचान की सूची, बच्चों में जेंडर पहचान का विकास, जेंडर पहचान को प्रभावित करने वाले कारक, जेंडर समानता एवं जेंडर समानता, जेंडर समानता का अर्थ, जेंडर असमानता का अर्थ, भारत में जेंडर असमानता के प्रमुख कारण, जेंडर इक्विटी और जेंडर इक्वालिटी में अंतर, कक्षा में जेंडर भेदभाव, कक्षा में जेंडर समानता को कैसे बढ़ावा दें?, जेंडर संवेदनशीलता, जेंडर संवेदनशीलता क्या है?, जेंडर संवेदनशील शिक्षा क्या है?, जेंडर संवेदी कक्षा, शिक्षकों के बीच जेंडर संवेदनशीलता, शिक्षा के माध्यम से जेंडर संवेदनशीलता के पोषण का महत्व, स्त्रीत्व और पुरुषत्व, स्त्रीत्व और पुरुषत्व का अर्थ, स्त्रीत्व और पुरुषत्व की परिभाषा, स्त्रीत्व और पुरुषत्व के लक्षण, पितृसत्ता पितृसत्ता अर्थ एवं अवधारणा, पितृसत्तात्मक व्यवस्था के लक्षण, पितृसत्ता हमारे समाज को कैसे प्रभावित करती है, पितृसत्ता की संरचनाएं, पितृसत्ता के प्रकार, पितृसत्ता के प्रभाव, पितृसत्ता के फायदे और नुकसान, पितृसत्ता के पक्ष व विपक्ष पर निष्कर्ष, जेंडर रूढ़ियां, जेंडर रूढ़िवादी या क्या है?, जेंडर रूढ़िवादिता कहां से आती है?, जेंडर रूढ़िवादिता के नकारात्मक प्रभाव, जेंडर रोगियों से संबंधित कुछ आम भ्रांतियां, जेंडर रूढ़िवादिता के कुछ उदाहरण, जेंडर रूढ़िवादिता के विभिन्न कारक, जेंडर रूढ़िवादिता को रोकने के कुछ सुझाव, जेंडर रूढ़िवादिताः समाधान शिक्षा में निहित, नारीवाद, नारीवाद का सामान्य अर्थ, नारीवाद के प्रमुख विचार, नारीवाद सिद्धांत, नारीवाद के प्रकार, जागरूकता की आवश्यकता।

इकाई 2:– जेंडर आधारित समाजीकरण

समाजीकरण, समाजीकरण की पिरभाषा, समाजीकरण की विशेषताए, समाजीकरण के उद्देश्य, समाजीकरण की प्रक्रिया के प्रमुख कारक, बालक के समाजीकरण करने के प्रमुख अभिकरण, समाजीकरण की प्रक्रिया में शिक्षक का कार्य, जेंडर समाजीकरण, जेंडर समाजीकरण के अभिकरण, समाजीकरण के प्रमुख सिद्धांत।

इकाई 3:– बालिका शिक्षा की वर्तमान स्थिति

बालिका शिक्षा की अवधारणा एवं विकास, भारत में महिल एवं पुरूष साक्षरता दर का प्रतिशत, बालिका शिक्षा की आवश्यकता तथा महत्व, भारत में बालिका शिक्षा के लाभ, बालिका शिक्षा की समस्याएँ एवं समाधान, बालिका शिक्षा हेतु सुझाव, बालिका शिक्षा को बढावा देने हेतु सरकार द्वारा चलायी जाने वाली विभिन्न योजनायें।

इकाई 4:– विद्यालय में जेंडर असमानता

जेंडर असमानता से तात्पर्य, जेंडर असमानता के दुष्परिणम्, भारत में जेंडर असमानता के कारण, जेंडर समानता स्थापित करने वाले सामाजिक अभिकरण, जेंडर समानता हेतु पाठयपुस्तकों की भुमिका, जेंडर समानता हेतु संगी साथी (पियर ग्रुप) की भूमिका, शिक्षा के द्वारा जेंडर समानता, जेंडर समावेशी कक्षा कक्ष एवं शिक्षक, एक जेंडर समावेशी कक्षा कक्ष बनाने हेतु सुझाव, छुपा पाठयक्रम – प्रतीकवाद से परे।

बी.एड द्वितीय वर्ष

तृतीय प्रश्न पत्र

ज्ञान तथा पाठ्यचर्या

इकाई 1:– ज्ञान की प्रकृति

ज्ञान की संकल्पना, ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया, ज्ञान के स्त्रोत, ज्ञान के प्रकार, ज्ञान और सूचना, ज्ञान का महत्व, ज्ञान और सूचना में अंतर।

इकाई 2:– पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, पाठ्य–पुस्तकें तथा कक्षा

पाठ्यचर्या, पाठ्यचर्या का अर्थ एवं परिभाषाएँ, पाठ्यचर्या की प्रकृति, पाठ्यचर्या विकास के उद्देश्य, पाठ्यचर्या के प्रकार, विद्यालय में पाठ्यचर्या की आवश्यकता, पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रम का अर्थ एवं परिभाषाएँ, पाठ्यक्रम का उद्देश्य, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यक्रम में संबंध, पाठ्य पुस्तक, पाठ्य पुस्तक का अर्थ एवं परिभाषाएँ, पाठ्य पुस्तक की विशेषताएँ, पाठ्य पुस्तक के प्रकार, पाठ्य पुस्तक की आवश्यकता एवं महत्व शिक्षक के लिए पाठ्य पुस्तक, कक्षा, पाठ्यक्रम तथा पाठ्यचर्या का महत्व, पाठ्यचर्या का स्तर।

इकाई 3:– पाठ्यक्रम के सामाजिक आधार

शिक्षण के उद्देश्य, विषय विवेचना, शिक्षा में समाजशास्त्री प्रवृत्ति, समाज की बदलती आवश्यकताएं एवं पाठ्यक्रम, आधुनिक समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा एवं पाठ्यक्रम, सामाजिक स्थिति और पाठ्यक्रम, परिवार एवं पाठ्यक्रम, परंपराएं एवं पाठ्यक्रम, शिक्षक एवं पाठ्यक्रम, शिक्षार्थी एवं पाठ्यक्रम, समाज में बदलती आवश्यकताएं एवं पाठ्यक्रम, वर्तमान भारतीय समजा एवं उसकी समस्याएं, राष्ट्रीय एकता एवं पाठ्यक्रम पर प्रभाव, कृषि का विकास एवं पाठ्यक्रम पर प्रभाव, कार्यशील महिलाओं की समस्या एवं पाठ्यक्रम पर प्रभाव, बढ़ती जनसंख्या और पाठ्यक्रम पर प्रभाव, विज्ञान एवं तकनीकी और उसके विकास से वर्तमान पाठ्यक्रम में पड़ने वाला प्रभाव, औद्योगिकरण और नगरीकरण एवं पाठ्यक्रम पर प्रभाव।

इकाई 4:– शिक्षा का व्यवसायीकरण एवं पाठ्यक्र निर्माण

व्यवसायिक पाठ्यक्रम वर्तमान में उसकी आवश्यकता तथा महत्व, कक्षा प्रबंधन, शिक्षा का व्यवसायीकरण तथा व्यवसायिक शिक्षा, विद्यार्थी केंद्रित शिक्षा, सामाजिक न्याय, नैतिकता और शिक्षा, पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया, पाठ्यक्रम मूलयांकन की प्रक्रियाएं, पाठ्यक्रम निर्माण में शासन की भूमिका, पाठ्यक्रम निर्माण में विभिन्न सामाजिक घटकों की भूमिका।

बी.एड. द्वितीय वर्ष

प्रश्न पत्र - चतुर्थ
अधिगम के लिए आकलन

इकाई 1 – अधिगम में आकलन एवं मूल्यांकन का पूर्ण दृष्टिकोण

आकलन का अर्थ, आकलन की परिभाषा, आकलन के उद्देश्य, आकलन के प्रकार, मूल्यांकन, मूल्यांकन के सिद्धांत, मूल्यांकन प्रक्रिया, मूल्याकन की प्रविधि, मूल्यांकन की उपयोगिता वर्तमान परीक्षा प्रणाली, परीक्षा के प्रकार तथा इनका निर्माण, परीक्षा की अवधारणा, वर्तमान परीक्षा प्रणाली, परीक्षा प्रणाली के प्रकार, परीक्षा में किये गये प्रयास एवंसुधार, वर्तमान परीक्षा प्रणाली क्षेत्र और सीमायें, परीक्षा प्रणाली पर शिक्षा का प्रभाव, वर्तमान पद्धति को सुधारने के लिए सुझाव। अधिगम में आकलन व अधिगम हेतु आकलन में अंतर, अधिगम का आकलन, अधिगम के लिए आकलन, संरचनात्मक आकलन, योगात्मक आकलन, सत्त व व्यापक मूल्यांकन, ग्रेडिंग।

इकाई 2 – आकलन क्या करें ?

अधिगम प्रक्रिया का अवलोकन, स्वयं व शिक्षक के द्वारा आकलन, कार्य के आधार पर परियोजना (प्रोजेक्ट पद्धति) प्रोजेक्ट पद्धति का अर्थ तथा परिभाषा, प्रोजेक्ट पद्धति के आवश्यक पद, प्रोजेक्ट पद्धति की कार्यप्रणाली, प्रोजेक्ट पद्धति के गुण, प्रोजेक्ट पद्धति के दोष, पोर्टफोलियो बनाना एवं गुणात्मक एवं परिणात्मक पक्ष, छात्र पोर्टफोलियो किसके लिए? –छात्र पोर्टफोलियो का प्रकार, छात्र पोर्टफोलियो निर्माण प्रक्रिया, छात्र पोर्टफोलियो में क्या? छात्र पोर्टफोलियो की सीमायें, पृष्ठपोषण – पृष्ठपोषण के प्रकार, पृष्ठपोषण प्रतिक्रिया ग्रहण करने हेतु सुझाव, पृष्ठपोषण, प्रतिक्रिया: निर्माणात्मक आकलन का घटक, पृष्ठपोषण की विशेषताएं, पृष्ठपोषण की प्रक्रिया, पृष्ठपोषण द्वारा अधिगम प्रक्रिया में लाभ।

इकाई 3 – परीक्षा प्रणाली में सुधार हेतु विभिन्न आयोग व अनुशंसाओं की जानकारी–

माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952-53 (मुदालियर कमीशन), कोठारी आयोग (1964-66), नई शिक्षा नीति (2022), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या प्रारूप (NCF)।

इकाई 4– माध्य, माध्यिका, बहुलक एवं सहसम्बन्ध –

केन्द्रीय प्रवृति–समान्तर माध्य: गुण–दोष एवंउपयोग, माध्य की गणना, माध्यिका: गुण–दोष एवंउपयोग ,माध्यिकाकी गणना, बहुलक: गुण–दोष एवं उपयोग, बहुलक की गणना, सह-संबंध – सह -संबंध की दिशाएं , सह–संबंध के प्रकार।

बी.एड. द्वितीय वर्ष

प्रश्न पत्र – पंचम

निर्देशन एवं परामर्श

इकाई – 1 निर्देशन –

निर्देशन का अर्थ एवं परिभाषाएँ, निर्देशन के विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, निर्देशन की विशेषताएँ, निर्देशन के उद्देश्य, निर्देशन की प्रकृति, निर्देशन का क्षेत्र, निर्देशन की आवश्यकता एवं महत्व, निर्देशन का लक्ष्य, निर्देशन का सिद्धांत।

इकाई – 2 निर्देशन के प्रकार - व्यक्तिगत, शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन –

निर्देशन के प्रकार, व्यक्तिगत निर्देशन का अर्थ एवं परिभाषाएँ, व्यक्तिगत निर्देशन की प्रकृति, व्यक्तिगत निर्देशन का उद्देश्य, व्यक्तिगत निर्देशन का क्षेत्र, विभिन्न स्तरों पर व्यक्तिगत निर्देशन, शैक्षिक निर्देशन का अर्थ एवं परिभाषाएँ, शैक्षिक निर्देशन की प्रकृति, शैक्षिक निर्देशन का उद्देश्य, शैक्षिक निर्देशन का क्षेत्र, विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक निर्देशन, व्यावसायिक निर्देशन का अर्थ एवं परिभाषाएँ, व्यावसायिक निर्देशन की प्रकृति, व्यावसायिक निर्देशन का उद्देश्य, व्यावसायिक निर्देशन का क्षेत्र, विभिन्न स्तरों पर व्यावसायिक निर्देशन भारत के संदर्भ में निर्देशन की आवश्यकता एवं महत्व।

इकाई – 3 परामर्श अर्थ, प्रकृति, उपागम और सेवाएँ –

परामर्श का अर्थ, परामर्श की परिभाषा, परामर्श की प्रकृति, परामर्श की विशेषताए, परामर्श के स्तर, परामर्श की मान्यताए, परामर्श के सिद्धात, परामर्श के क्षेत्र, परामर्श प्रक्रिया के चरण, परामर्श के उपागम, निर्देशात्मक उपागम, निर्देशात्मक परामर्श की मूलभूत धारणाए, निर्देशात्मक परामर्श की प्रक्रिया, निर्देशात्मक परामर्श की विशेषताएँ, निर्देशात्मक परामर्श के लाभ, निर्देशात्मक परामर्श की सीमाएँ, अनिर्देशात्मक परामर्श, अनिर्देशात्मक परामर्श की मूल अवधारणाए, अनिर्देशात्मक परामर्श की प्रक्रिया अनिर्देशात्मक परामर्श की विशेषताएँ, अनिर्देशात्मक परामर्श के लाभ, अनिर्देशात्मक परामर्श की सीमाएँ, समाहारक / संग्रही उपागमँ, समाहारक / संग्रही उपागम की प्रक्रिया, संग्रही परामर्श की विशेषताएँ, संग्रही परामर्श की सीमाएँ, परामर्श की सेवाएँ, व्यक्तिक परामर्श, व्यक्तिक परामर्श के उद्देश्य, व्यक्तिक परामर्श के सिद्धात, समूह परामर्श, समूह परामर्श के उद्देश्य, समूह परामर्श की प्रक्रिया, समूह परामर्श के लाभ, वृत्तिक परामर्श, वृत्तिक परामर्श के उद्देश्य, वृत्तिक परामर्श के लाभ, परामर्श और निर्देशन मे अतर।

इकाई – 4 निर्देशन एवं परामर्श में नवीन प्रवृत्ति, दूरस्थ शिक्षा, विश्लेषण एवं मूल्यांकन –

निर्देशन एवं परामर्श में नवीन प्रवृत्ति , दूरस्थ शिक्षा , दूरस्थ शिक्षा का अर्थ, दूरस्थ शिक्षा की परिभाषाएँ, दूरस्थ शिक्षा की प्रकृति, वर्तमान में दूरस्थ शिक्षा का विकास, दूरस्थ शिक्षा का कार्य–क्षेत्र, दूरस्थ शिक्षा का निर्देशन एवं परामर्श में महत्व, निर्देशन एवं परामर्श में दूरस्थ शिक्षा की भूमिका, निर्देशन एवं परामर्श में मूल्यांकन, मूल्यांकन का अर्थ, मूल्यांकन की परिभाषाएँ, मूल्यांकन के प्रमुख उद्देश्य एवं कार्य, निर्देशन एवं परामर्श में मूल्यांकन द्वारा समस्याओं का समाधान, निर्देशन/परामर्श में मूल्यांकन के प्रमुख सोपान, निर्देशन/परामर्श कार्यक्रम के मूल्यांकन की विधाए।